हिंदी विश्व

विश्व हिंदी सम्मेलन
फ़िजी, 2023

शुक्रवार, 17 फरवरी 2023 • फ़िजी में आयोजित 12वें विश्व हिंदी सम्मेलन पर केंद्रित समाचार पत्र • तीसरा अंक

अनुवाद से ही विश्व की भाषाओं में संवाद : प्रो. बलवंत जानी

नादी, 16 फरवरी, 2023। विश्व हिंदी सम्मेलन के दूसरे दिन 'भाषाई समन्वय और हिंदी अनुवाद' विषय पर आयोजित सत्र की अध्यक्षता करते हुए सागर केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो. बलवंत शांतिलाल जानी ने कहा कि आज ऐसी राष्ट्रीय योजनाएँ बनी हैं कि हम अपनी भाषा के साथ–साथ दुनिया की अन्य भाषाओं को भी सीख–समझ सकते हैं। यहाँ तक कि अनुवाद के कारण रूसी एवं विश्व की अन्य भाषाओं में भी संवाद संभव हो पाया है। जानेमाने शिक्षाविद् और अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय, बिलासपुर के कुलपति प्रो. ए.डी.एन. वाजपेयी ने कहा कि भारतीय जीवन मूल्यों से उपजी हमारी भाषाओं और पाश्चात्य

भारतीय जीवन मूल्यों से उपजी भाषाओं और पाश्चात्य भाषाओं के बीच समन्वय आवश्यक : ए.डी.एन. वाजपेयी

भाषाओं के बीच समन्वय आवश्यक है। उन्होंने कहा कि कुछ चीजों का अनुवाद नहीं हो सकता। हमारे बीज मंत्र ओम् का अनुवाद नहीं हो सकता है, उसके तो उच्चारण मात्र से ही कल्याण हो जाता है। धर्म शब्द का अनुवाद हो ही नहीं सकता। जैसे दर्शन का अर्थ देखना है, किंतु केवल देख लेने मात्र से दर्शन नहीं होता। जब अदृश्य का दर्शन होता है तो दर्शन कहलाता है। जहां मनोविज्ञान थमता है वहां दर्शन दिखता है। शिक्षा मंत्रालय के हिंदी भाषा विकास परिषद् के निदेशक व दिल्ली विश्वविद्यालय के सिंधी भाषा विभाग के प्रो. रविप्रकाश टेकचंदानी ने कहा कि भाषाई समन्वय और हिंदी के अनुवाद को वे सॉफ़्ट पावर के रूप में देखते हैं। लगभग सभी भारतीय भाषाओं के शब्द भंडार एक जैसे हैं। आई. आई. टी. मुंबई, सेंटर फ़ॉर डिजिटल हेल्थ के अध्यक्ष प्रो. गणेश रामकृष्ण ने कहा कि शिक्षा में भाषा की बाधा को तोड़ना हमारा लक्ष्य है। न्यूनतम समय में अनुवाद और सामग्री निर्माण कैसे हो, इसके लिए समावेशी प्रक्रिया जरूरी है। शब्दकोश के अनुरूप अनुवाद हो, जिससे अनुवाद की गुणवत्ता सुसंगत हो। ऐसे बहुत से शब्द हैं, जो हमारे पुरातन ग्रंथों में पहले से हैं। अनुवाद के समय में हमें अपने भारतीय ग्रंथों में पाए जाने वाले शब्दकोश को प्राथमिकता देना

आवश्यक है, जिससे हमारे प्राचीन ज्ञान परंपरा का पुनरुत्थान हो। पा. रम्परिक ज्ञान एवं कृत्रिम मेधा के संगम के लिए हमने संशोधन किए और टूल्स उपलब्ध करवाए हैं। लेखक एवं अनुवादक प्राचार्य भूषण भावे ने कहा कि पारंपरिक ज्ञान से कृत्रिम मेधा तक हमें दो स्तर पर कार्य करना है। एक तो दुनिया की समस्याओं को हमें पारंपरिक ज्ञान से ही सुलझाना है, दूसरे इसका डिकोडिंग कर कृत्रिम मेधा का उपयोग कर पुरखों की ज्ञान या परंपरा जिसे हम भूल गए थे, उसे वापस जिंदा करना है। भाषाई समन्वय हमें पश्चिम से सीखने की आवश्यकता नहीं है। भाषा के नाम पर विवाद हमारी संस्कृति नहीं है।

'भाषा के माध्यम से व्यापार आगे बढ़े, न कि भाषा ही व्यापार बन जाए'

नादी, 16 फरवरी, 2023। फिजी में आयोजित विश्व हिंदी सम्मेलन के दूसरे दिन शिक्षाविद् प्रो. चमनलाल गुप्ता की अध्यक्षता में 'विश्व बाजार और हिंदी' विषय पर एक सत्र का आयोजन किया गया। सत्र के आरंभ में प्रभात प्रकाशन के श्री प्रभात कुमार ने कहा कि आज देश की 140 करोड़ में से 90 करोड़ जनसंख्या किसी–न–किसी रूप में हिंदी का उपयोग करती है और आज बहुराष्ट्रीय कंपनियां हिंदी की इसी महत्ता को देखते हुए विज्ञापन में हिंदी का उपयोग करने लगी हैं। सत्र के दौरान भारतीय विदेश सेवा अधिकारी डॉ. अंजू रंजन जी ने हिंदी को तकनीक से जोड़ने की बात कही। उन्होंने कहा कि आज हिंदी में सॉफ्टवेयर बनाने की जरूरत है। कहीं–न–कहीं बाजार में हम एक उपभोक्ता बनकर रह गए है। अटल बिहारी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल के कुलपति प्रो. खेमसिंह डेहरिया ने कहा कि मध्य प्रदेश पहला राज्य है, जहां हिंदी में इंजीनियरिंग एवं चिकित्सा

शेष पृष्ठ 02 पर

हिंदी शिक्षण की चुनौतियों के निदान में भारत सरकार अग्रसर : अंशुली आर्या

नादी, 16 फरवरी, 2023। विश्व हिंदी सम्मेलन के दूसरे दिन 'देश–विदेश में हिंदी शिक्षण : चुनौतियां एवं समाधान' विषय पर आयोजित सत्र की अध्यक्षता करते हुए अंशुली आर्या ने कहा कि आज हिंदी का प्रयोग बहुतायत से हो रहा है। जब देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी हिंदी में बातचीत करते हैं और निर्देश देते हैं तो उनके अधिकारी और आम जन उनसे प्रेरित होकर हिंदी में ही बात और व्यवहार करते हैं। केंद्रीय हिंदी निदेशालय एवं केंद्रीय हिंदी संस्थान, हिंदी के शिक्षण–प्रशिक्षण के लिए कार्य कर रहा है, जिसे वर्तमान में ठीक से क्रियान्वित किया जा रहा है। आज ऑनलाइन पाठ्यक्रम समय की मांग है, जिसे क्रियान्वित करने के लिए सरकार पूर्णतः प्रयासरत है। विदेश मंत्रालय के आईसीसीआर के द्वारा सांस्कृतिक संबंधों को विकसित करने एवं हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए निरंतर कार्य किया जा रहा है और जो भी चुनौतियां आ रही हैं, उनका ठीक से निदान किया जा रहा है। डॉ. राजशेखर ने कहा कि हिंदी संपूर्ण भारत के साथ विश्व को जोड़नेवाली भाषा है। इसकी चुनौतियों को हिंदी एवं हिंदीतर राज्यों में बांटकर देखना चाहिए।

शेष पृष्ठ 02 पर

'कर्मा' ने 1933 में हिंदी को दी वैश्विक पहचान : अनंत विजय

नादी, 16 फरवरी, 2023। जब भारत हिंदी सिनेमा के प्रारंभिक दौर में था, तब सन् 1933 में यहाँ बनी फिल्म 'कर्मा' ने वैश्विक मंच पर अपने अभिनय, तकनीक, सिनेमाटोग्राफी, संगीत और दृश्यों की विशिष्टता के कारण खूब प्रशंसा प्राप्त की थी–ये बातें कहीं वरिष्ठ पत्रकार और हिंदी सिनेमा के विशेषज्ञ अनंत विजय ने। उन्होंने 12वें विश्व हिंदी सम्मेलन के दूसरे दिन 'हिंदी सिनेमा के विविध रूप : वैश्विक परिदृश्य' सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में अपना वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि हिमांशु राय और देविका रानी के इस सिनेमा का लंदन में प्रीमियर हुआ था और उसके हर पक्ष पर विचार किया गया था। उन्होंने भारतीय अभिनेता राज कपूर की फिल्मों का उल्लेख करते हुए कहा कि उनके गानों का अनुवाद इजरायल तक में हुआ था। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि भारतीय फिल्मों में निहित नैतिकता के तत्त्व उन्हें पूरी दुनिया में विशिष्ट बनाते हैं। उन्होंने भारतीय निर्देशकों दादा साहब फाल्के, ऋषिकेश मुकर्जी, विमल राय, सत्यजीत रे, व्ही शांताराम इत्यादि के योगदान का उल्लेख किया। श्री अनंत

ने कहा कि वे सिनेमा अधिक प्रसिद्ध हुए हैं, जो लोक के अनुकूल रहे हैं, लोक–विरुद्ध सिनेमा को लोगों ने बहिष्कृत कर दिया है। उन्होंने कहा कि वर्तमान दौर में निर्देशकों की भूमिका सीमित हो गई है और नायकों का बोलबाला हो गया है। इसलिए एक बार पुनः भारतीय सिनेमा में निर्देशकों की भूमिका को पुनर्स्थापित करने की आवश्यकता है। अध्यक्षीय

फिल्म में संवाद लेखन का बहुत महत्व : प्रो. तोमियो मिजोकामी

वक्तव्य में जापान के ओसाका विश्वविद्यालय में हिंदी विषय के प्राध्यापक प्रो. तोमियो मिजोकामी ने 'बोस : द फॉरगॉटन हीरो' फिल्म के दृश्यों और संवादों के माध्यम से संवाद–लेखन और शब्द–चयन की महत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि हिंदी सिनेमा इसलिए दुनियाभर में प्रसिद्ध हुए, क्योंकि उनमें बोलचाल के शब्दों का उपयोग किया गया है। उत्तर प्रदेश के पूर्व शिक्षा मंत्री डॉ. रवींद्र शुक्ल ने कहा कि विश्व में हिंदी का परचम लहराने में हिंदी सिनेमा ने अपना पूरा योगदान दिया है। उन्होंने कहा कि आज दक्षिण भारतीय भाषाओं की फिल्मों की हिंदी में डबिंग इस बात के प्रमाण हैं कि सभी को हिंदी के दर्शक चाहिए। उन्होंने कहा कि हिंदी आज बाजार की भाषा है। उन्होंने चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि हिंदी फिल्मों के अंदर आनेवाली विकृतियों ने हमें दुष्प्रभावित किया है। इस पर फिल्म जगत् और समाज के

विश्व में हिंदी का परचम लहराने में हिंदी सिनेमा ने अपना पूरा योगदान दिया है : डॉ. रवींद्र शुक्ल

हितैषियों को विचार करने की आवश्यकता है। जलगाँव, महाराष्ट्र से पधारे डॉ. सुनील बाबूराव कुलकर्णी ने अपने वक्तव्य में कहा कि हिंदी गीतों ने समाज पर अपना काफी असर छोड़ा है। उन्होंने कहा कि किसी भी फिल्म में वर्तमान समाज का चित्रण होता है, जिससे एक विमर्श का भी अवसर निर्मित होता है। उन्होंने कहा कि हिंदी फिल्मों ने हिंदी को बाजार की भाषा बनने में अपना उल्लेखनीय योगदान दिया है। उन्होंने चिंता व्यक्त की कि हिंदी फिल्मों में लिव–इन रिलेशनशिप जैसे विषयों के चित्रण से हमारी परिवार–व्यवस्था को समाप्त करने का षड्यंत्र हो रहा है, इसे रोकने की आवश्यकता है। ऑस्ट्रेलिया से पधारीं डॉ. रेखा राजवंशी ने 'भारतीय हिंदी सिनेमा का हिंदी शिक्षण में योगदान' विषय पर अपना विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मैं हिंदी गानों के माध्यम से विद्यार्थियों को हिंदी सिखाना शुरू करती हूँ। उन्होंने कहा कि 'सौ साल पहले मुझे तुमसे प्यार था, आज भी है और कल भी रहेगा' गाने के माध्यम से मैं तीनों कालों के बारे में बताती हूँ। आगे उन्होंने कहा कि हिंदी फिल्मों के गानों को समझने के लिए विश्वभर में लोगों ने हिंदी सीखी। उन्होंने कहा कि मौसम से जुड़े शब्दों को समझने के लिए लोग हिंदी सीखते हैं। ऑस्ट्रेलिया के लोग हिंदी फिल्मों को देखकर भारत के पर्व–त्योहारों के बारे में जानते हैं। उन्होंने एक दिलचस्प घटना की चर्चा करते हुए कहा कि एक युवती जब मेरे पास हिंदी सीखने के लिए आई तो मैंने उससे इसका कारण जानना चाहा तो उसने कहा कि मुझे अपनी सास की बात समझनी है, इसलिए हिंदी सीखना चाहती हूँ। श्रीलंका से पधारीं सुश्री अथिला कोठालवाला ने कहा कि मुझे हिंदी सीखने में हिंदी फिल्मों और उसके गानों से बहुत मदद मिलती है। सत्र का संचालन मणिपुर की लेखिका डॉ. आनंदी देवी हाओबम ने किया और धन्यवाद ज्ञापित किया डॉ. मलखान सिंह ने।

12वां विश्व हिन्दी सम्मेलन फिजी, २०२३

हिंदी विश्व

• फिजी • शुक्रवार, 17 फरवरी, 2023 • तीसरा अंक

2

हिंदी लोक अनुभव को शास्त्र अनुभव में अतिक्रांत करने की भाषा : प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल

नादी, 16 फरवरी, 2023। विश्व हिंदी सम्मेलन के दूसरे दिन 'भारतीय ज्ञान परंपरा का वैश्विक संदर्भ' विषयक सत्र की अध्यक्षता करते हुए महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने कहा कि ज्ञान की कोई सीमा नहीं है। सकल ज्ञान. राशि ही वेद है। भारतीय ज्ञान परंपरा के विविध वितान हैं। समस्त भारतीय भाषाओं में सन्निहित ज्ञान. राशि का उपयोग सभ्यतागत संक. टों से मुक्ति के लिए किया जाना चाहिए। गीता में कहा गया है कि ज्ञान से अधिक पवित्र कारक कोई नहीं है। प्रो. शुक्ल ने आनंदकुमार स्वामी के लेख का संदर्भ देते हुए कहा कि यह विचार किया जाना चाहिए कि भारतीय ज्ञानपरंपरा ने विश्व सभ्यता को क्या दिया? उन्होंने भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित लोक ज्ञान और अनुभव अर्जित ज्ञान को शास्त्रीय बनाए जाने की बात कही। यह लोक के सैद्धांतिकरण की प्रक्रिया है। भारतीय ज्ञान परंपरा सत्य और नैतिकता के साथ जुड़ी हुई है। भारत की सभी भाषाओं में अकूत ज्ञानराशि सन्निहित है। इस समय दुनिया की सभ्यता दृष्टि व्याघातों से घिरी है। इसलिए विश्व सभ्यता को वैकल्पिक सभ्यता दृष्टि देने के लिए हिंदी को साधुमत और लोकमत को ध्यान में रखना होगा। सत्र के सह–अध्यक्ष प्रो. योगेंद्र मिश्र ने विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि तुलसी भारतीय ज्ञान

परंपरा के आधार स्तंभ हैं और रामचरितमानस विश्व परिवार की आचार संहिता है। तुलसी वाङ्मय के अवगाहन से अभीष्ट प्राप्त होता है। इंदुशेखर तत्पुरुष ने भारतीय ज्ञान परंपरा के दो रूपों की चर्चा की–ज्ञान परंपरा और कला परंपरा। उन्होंने योग और आयुर्वेद को भारतीय ज्ञान परंपरा का अनुप्रयोगात्मक पक्ष बताया और कहा कि लोक प्रेरक के साथ लोक सेवकों को अपनी भूमिका निर्वहन के लिए आगे आना चाहिए। डॉ. के. श्रीलता ने दंडी को उद्धृत करते हुए कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा निरंतर प्रवाहमान है और हिंदी ने भारतीय ज्ञान परंपरा को अकूत शक्ति दी है। हिंदी वसुधैव कुटुंबकम् की भावना को साकार कर रही है। इस अवसर पर सुरेंद्र बिहारी गोस्वामी ने कहा कि हिंदी भाव–सागर की भाषा है। हिंदी ने भारतीय ज्ञान परंपरा को निरंतर समृद्ध किया है। प्रो. के. श्रीकांत ने कहा कि हिंदी की वास्. तविक स्थिति के बारे में सोचना चाहिए और आने वाली पीढ़ी को सरल हिंदी के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा से परिचित कराना चाहिए। डॉ.पद्मावती ने कहा कि बाजार ही समाज को संचालित करता रहा है। उन्होंने हिंदी को विश्व बाजार से जोड़ने की जरूरत पर बल दिया। कार्यक्रम के दौरान विदेश राज्यमंत्री वी. मुरलीधरन सहित बड़ी संख्या में हिंदीप्रेमी उपस्थित थे।

'भाषा के माध्यम से व्यापार आगे बढ़े, न कि भाषा ही व्यापार बन जाये'

पृष्ठ 01 का शेष

पाठ्यक्रमों की शुरुआत की गई है। उन्होंने कहा कि आज विश्व बाजार को हिंदी की आवश्यकता है। शिक्षाविद् प्रो. ललित बिहारी गोस्वामी ने कहा कि विश्व बाजार कोई नई संकल्पना नहीं है। बाजार एवं व्यापार के लिए हिम्मत और साख की जरूरत होती है और ये दोनों चीजें आत्मविश्वास और स्वाभिमान से आती हैं। सत्र के सह–अध्यक्ष प्रो. प्रदीप कुमार जोशी ने कहा कि आज सभी विषयों के विशेषज्ञों को हिंदी में अपने–अपने विषय को लिखने की आवश्यकता हैं। उन्होंने कहा कि यदि हमें किसी भी राष्ट्र की संस्कृति को समझना है, तो सबसे पहले हमें वहां की भाषा को समझना पड़ेगा। प्रो. नंदकिशोर पांडे ने हिंदी में आ. र्थक एवं प्रबंधन से जुड़ी पत्रिकाओं की आवश्यकता की बात कही। प्रो. अनिल राय ने कहा कि हिंदी बाजार की शक्तियों के साथ कदमताल कर रही है। उन्होंने सोशल मीडिया, अनुवाद एवं विज्ञापन में हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता की भी बात कही। डॉ. विवेकानंद उपाध्याय ने कहा कि हिंदी केवल बाजार की भाषा के रूप में न जानी जाए बल्कि वह अभिव्यक्ति की अपार संभावनाओं के कारण अपनी वैश्विक स्वीकृति बनाए। हिंदी में चिकित्सा क्षेत्र की पहला शोधप्रबंध हिंदी में लिखने वाले डॉ. सूर्यकांत ने कहा कि आज मध्यप्रदेश में हिंदी में चिकित्सा की पुस्तकें प्रकाशित होना बहुत बड़ी सफलता है। सत्र का संचालन डॉ. राजेश्वर ने किया और धन्यवाद ज्ञापन प्रो. नरेंद्र मिश्र ने किया।

सी–डैक द्वारा 'कंठस्थ 2.0' का लोकार्पण

12वें विश्व हिंदी सम्मेलन में सी–डैक, पुणे द्वारा राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के सहयोग से एक मेमोरी और न्यूरल मशीन अनुवाद आधारित मोबाइल एप 'कंठस्थ 2.0' का लोकार्पण किया गया। अंग्रेजी से हिंदी और हिंदी से अंग्रेजी में अनुवाद के लिए इस एप का निर्माण किया गया है। इस एप का लोकार्पण केंद्रीय गृह राज्यमंत्री अजय कुमार मिश्र और केंद्रीय विदेश राज्यमंत्री वी. मुरलीधरन के करकमलों से संपन्न

हुआ।

इस अनुवाद स्मृति प्रणाली का प्रमुख लाभ यह है कि यह एक अनुवादक को नई फाइल का अनुवाद करते समय पहले अनूदित खंडों का पुनः उपयोग करने की अनुमति देता है। अनुवाद के लिए प्रत्येक उपयोग के साथ लगातार यह टी.एम. डेटाबेस समृद्ध होता जाता है। इसके वर्तमान उपयोगकर्ताओं द्वारा इसके ग्लोबल मेमोरी डेटाबेस में 22 लाख से अधिक वाक्य अपलोड किए जा चुके हैं।

'कंठस्थ 2.0' को अब न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन, स्पीच टू टेक्स्ट (एसटीटी), ऑटोमेटेड चैटबॉट और यूजर–फ्रेंडली इंटरफेस जैसे उन्नत संस्करण के साथ अपग्रेड किया गया है।

हिंदी शिक्षण की चुनौतियों के निदान में भारत सरकार अग्रसर : अंशुली आर्या

पृष्ठ 01 का शेष

हिंदी केवल साहित्य की ही नहीं अपितु ज्ञान–विज्ञान की भी भाषा है। नालंदा से आए विजय करण ने कहा कि हिंदी शिक्षण में पूर्णता लाने के लिए पाठ्यक्रम में व्यावहारिक सुधार की जरूरत है। हमारी मानसिक तैयारी नहीं है, उसे तेज करने की आवश्यकता है। ईटानगर के डॉ. तारो सिंदिक ने कहा कि हिंदीतर भाषियों की जो चुनौतियां हैं, वही पूरे विश्व की चुनौतियां हैं। कोई भी भाषा वहां की सांस्कृतिक उपज होती है। अनेक समस्याओं के बाद पूर्वोत्तर के लोगों ने हिंदी को गले से लगाया है। डॉ. दुर्गारत्ना ने कहा कि हिंदी भारत माता की बिंदी है। हिंदी हमारे देश की राजभाषा, संपर्क भाषा, राज्य भाषा एवं राष्ट्रभाषा है। हिंदी हमारे लिए सीखने की भाषा है। हिंदी के विकास के लिए अनुवाद की जरूरत है। कर्नाटक में यदि हिंदी अकादमी की स्थापना हो तो हमारी चुनौतियां कुछ हद तक दूर होंगी। डॉ. जोराम

आनिया ने प्रदेश की भाषा में लिंग भेद की समस्याओं को रेखांकित किया। डॉ. सुनीता नारायन ने शिक्षण की चुनौतियों की तरफ संकेत करते हुए कहा कि चुनौतियां तो आती रहेंगी, सभी चुनौतियों को अवसर में बदलने की यदि ताकत है तो हिंदी के प्रति लगाव दिखेगा। सांसद रामचंद्र जांगड़ा ने कहा कि मानसिक गुलामी से मुक्त हुए बिना हिंदी का विकास संभव नहीं है। मॉरीशस की माधुरी रामधारी ने विश्व हिंदी सचिवालय के दो प्रमुख उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए हिंदी शिक्षण योजनाओं की नई विधियों के क्रियान्वयन पर जोर दिया। सत्र का संचालन प्रो. संजय सिंह बघेल ने किया।

बच्चे बचाएंगे हिंदी : डॉ. मृदुल कीर्ति

विश्व हिंदी सम्मेलन में आकर मैं गौरवान्वित महसूस कर रही हूँ। हिंदी के बारे में मेरा मानना है कि उसकी लिपि में अपना दर्शन समाहित है तथा लिपि की अपनी गूढ़गर्भिता होती है। लिपि में ही एक प्रकार की संस्कृति होती है। लिपि में भाव का प्रवाह होता है और अर्थगर्भिता होती है। विदेशों में रहने वाले भारतीयों के घरों में जब तक हिंदी बोली जाएगी, तब तक हिंदी सुरक्षित रहेगी तथा उनके बच्चे हिंदी से जुड़े रहेंगे। भाषा स्वयं में ही एक मुखरित संस्कृति होती है।

नई पीढ़ी को हिंदी से जोड़ना होगा : प्रो. उल्फत मुहीबोवा

यदि हिंदी को देवनागरी लिपि में नहीं लिखेंगे तो भावी पीढ़ी हिंदी माध्यम से लिखित पुस्तकों को नहीं समझ पाएगी और उससे भारत का इतिहास तथा सभ्यता, संस्कृति के पक्ष अछूते रहेंगे। किसी भी भाषा को जिस लिपि में लिखा जाता है, उस लिपि में ही उसका मूलतत्व निहित होता है। नई पीढ़ी को हिंदी से जोड़ने के लिए उसे रुचिकर बनाना बहुत ज़रूरी है और इसमें ऑडियो–वीडियो का बहुत योगदान हो सकता है। हिंदी पढ़ने वालों के लिए आज अनुवाद, पर्यटन, अध्यापन तथा पत्रकारिता आदि के रोज़गार के अवसर सृजित हुए हैं।

भारत की हिंदी अब वैश्विक चेतना से संपन्न विश्व हिंदी बन गई है : सूर्य प्रसाद दीक्षित

पहले के 10 विश्व हिंदी सम्मलेन मूलतः साहित्य–केंद्रित थे। उनमें साहित्यकारों का वर्चस्व था जबकि हिंदी महज साहित्य नहीं है, हिंदी मूलतः भाषा है, फिर साहित्य, संस्कृति और विचार है। भोपाल के विश्व हिंदी सम्मेलन के बाद हिंदी भाषा और उसके साहित्य पर बात होने लगी है। फिजी का यह विश्व हिंदी सम्मेलन इस मामले में विशिष्ट है कि इसमें हिंदी के साथ तकनीक और कृत्रिम मेधा की बात हो रही है। आज विश्व पटल पर जिस भाषा का बाजार है, तकनीक है, वही भाषा फल–फूल रही है। हिंदी को भी इस स्पर्धा में खड़ा होना होगा। आज ज्ञान–विज्ञान, उद्योग और तकनीक के क्षेत्र में हिंदी को अंग्रेजी से मुकाबला करना है। फिजी के इस 12वें विश्व हिंदी सम्मेलन ने इसकी शुरुआत कर दी है। हिंदी जगत अब व्यापक हो गया है। इसमें भारतवंशियों और आप्रवासी भारतीयों की बड़ी भूमिका है। अपने–अपने देशों में ये वहां की राजनीति तक को प्रभावित कर रहे हैं यानी अब अंतरराष्ट्रीय राजनीति में हिंदी की भूमिका बढ़ गई है।

मैं इसके पक्ष में हूँ कि हमें आधुनिक तकनीक और मशीन से डरना नहीं चाहिए। यह आज के समय की जरूरत है। पेपरलेस, पेनलेस और मशीनी हिंदी भी हमें लाभ पहुंचाएगी। हमें तकनीक और कृत्रिम मेधा का इस्तेमाल करके हिंदी भाषा के माध्यम से भारतीय संस्कृति को पूरे विश्व में फैलाना है। जिस तरह से बौद्ध धर्म पूरी दुनिया में फैल गया, उसी तरह से सनातन धर्म का भी प्रचार–प्रसार करना होगा। आज हमें जीवन मूल्यों को भी समझना है और बाजार मूल्यों को भी यानी हिंदी मशीनीकरण और बाजार से भी जुड़ेगी और उच्च मानवीय मूल्यों से भी। अंग्रेजी की तरह हिंदी में भी ग्लैमर पैदा करना जरूरी है। हिंदी को अब बेचारगी से निकालना है। पूरे वैभव के साथ विश्व में हिंदी की स्थापना करनी होगी। हिंदी अब दयनीय नहीं, महनीय होनी चाहिए।

12वां विश्व हिन्दी सम्मेलन फिजी, २०२३

हिंदी विश्व

• फिजी • शुक्रवार, 17 फरवरी, 2023 • तीसरा अंक

हिंदी साहित्य वटवृक्ष और प्रवासी साहित्य उसकी पल्लवित शाखाएं : डॉ. नीरजा अरुण गुप्ता

नादी, 16 फरवरी 2023। 12वें विश्व हिंदी सम्मेलन के दूसरे दिन 'बदलते परिदृश्य में हिंदी साहित्य' विषय पर समानांतर सत्र की सह–अध्यक्ष प्रो. नीरजा अरुण गुप्ता ने कहा कि प्रवासी हिंदी साहित्य ने अपनी यात्राएं अनेक पड़ावों पर पार की है। उन्होंने कहा कि गिरमिटिया देशों की हिंदी और उनकी संस्कृति की धमक साहित्य में मजबूती से उपस्थित हो रही है। उनके लेखन में रामायण, महाभारत आदि महाकाव्यों का प्रभाव भी दृष्टिगोचर होता है। फिजी, गयाना, मॉरीशस आदि देशों का साहित्य अपनी प्रगतिशीलता में मुखरित हो रहा है। उन्होंने हिंदी साहित्य को वटवृक्ष के समान मानते हुए प्रवासी साहित्य को उसकी विभिन्न शाखाओं की संज्ञा दी। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि

प्रवासी साहित्यकारों ने हिंदी को अंतरराष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया है।

विकास दवे ने कहा कि हिंदी साहित्य के अवदान में प्रवासियों के सामाजिक सरोकारों की चर्चा कम होती है। ब्रह्मचर्य की उपयोगिता पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि महाकाव्यों के मूल मंतव्य को केंद्र में रखते हुए सांस्कृतिक मूल्यों की पड़ताल करनी चाहिए। वर्तमान परिदृश्य में प्रवासी साहित्य में स्त्री विमर्श तेजी से उभरकर आ रहा है।

जनार्दन रेड्डी ने कहा कि प्रवासी साहित्य के संदर्भ में सामाजिक जागरूकता की महती आवश्यकता है। भारतीय प्रवासियों ने हिंदी और भारतीय संस्कृति को संरक्षित रखा है। प्रवासी साहित्यकार अपने जीवन संघर्षों और अनुभवों की अभिव्यक्ति कर रहे हैं। उनके लेखन की रचना भूमि अलग है। डॉ. मृदुल कीर्ति ने भाषा और संस्कृति के मुखरित स्वरूप की बात कही। प्रवासी साहित्य की समृद्धि और प्रासंगिकता के संदर्भ में मृदुल कीर्ति ने कहा कि प्रवासियों की मनोदशा उनके लेखन में झलकती है। प्रांतीय भाषाओं में भी प्रवासी साहित्यकारों ने अमृत ग्रंथों पर अपनी रचना की है, जो अपने आप में विलक्षणता लिये हुए उपस्थित हैं। डॉ. विजयानंद ने कहा कि प्रवासियों ने हिंदी को अपनी मिट्टी से जोड़े रखा है। आज के युवाओं को भी अपनी मिट्टी से यह जुड़ाव बनाए रखना चाहिए। सत्राध्यक्ष प्रो. अरुण कुमार भगत ने कहा कि चित्त में स्थित अनुभूतियों का प्रकटीकरण ही साहित्य है। विभिन्न देशों का प्रवासी साहित्य विभिन्न कारणों से अलग–अलग है। गिरमिटिया देशों के प्रवासी साहित्य में सांस्कृतिक विरासत की झलक मिलती है। जीवन और जगत की परिस्थितियों के कलह–कोलाहल का प्रभाव भी साहित्य पर पड़ता है और स्वदेश–परदेस का द्वंद्व मन–मस्तिष्क में उमड़ता–घुमड़ता रहता है। देश, काल और परिस्थिति से उपजी अनुभूतियां जब अक्षरित होती हैं, तो वे साहित्य की भूमि बन जाती हैं और समय के साथ परिपक्व होती हैं। समग्रता हमें भारतीय हिंदी साहित्य में दिखाई पड़ती है, लेकिन अस्मितामूलक चेतना का परिपाक प्रवासी साहित्य में उभरकर आया है। प्रवासी साहित्य सांस्कृतिक सेतु का कार्य करता है और भारतीय संस्कृति के मूल्यों को वैश्विक फलक प्रदान करता है। संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अनीश ने किया।

सोशल मीडिया से बढ़ेगा हिंदी का प्रसार : प्रो. रेशमी रामधोनी

नादी, 16 फरवरी 2023। मॉरीशस में हिंदी माध्यम से पढ़ने वालों के लिए शिक्षण और पत्रकारिता के अतिरिक्त रोजगार के ज्यादा अवसर नहीं हैं। ऑनलाइन माध्यमों और सोशल मीडिया का प्रयोग करके हिंदी का प्रचार–प्रसार और अधिक व्यापकता से किया जा सकता है। मॉरीशस में मॉरीशस सरकार हिंदी के बढ़ावे के लिए समय–असमय पर विभिन्न साहित्यिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम करती रहती है। मॉरीशस में लेखन खूब हो रहा है, बस हिंदी में पढ़ने का अभ्यास बनना चाहिए। इस प्रकार के आयोजनों से लोगों को हिंदी तथा भारतीय सभ्यता–संस्कृति से जुड़े रहने में सहायता मिलती है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी का विस्तार : प्रो. कुमुद शर्मा

यह हमारे लिए गर्व और स्वाभिमान की बात है कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी का विस्तार और फैलाव हो रहा है। कई शताब्दियों का सफर तय कर अपने विकास की कई मंजिलें पार कर हिंदी आज बहुत कुछ समेटते हुए, बहुत कुछ छोड़ते हुए अपनी अंतरराष्ट्रीय क्षमता की पहचान करा रही है। यही विकास नए विश्वग्राम और नए विश्वमानव की मॉग है। राजभाषा, संपर्क भाषा, जनभाषा के सोपानों को पार कर हिंदी विश्वभाषा बनने की ओर अग्रसर है। विश्व के अनेक देशों में हिंदी पढ़ने–सीखने की बढ़ती मॉग इस बात का संकेत है आनेवाले समय में हिंदी वैश्विक संपर्क–भाषा बनने की क्षमता रखती है। उच्च प्रौद्योगिकी के युग में संचार क्रांति के रथ पर आरूढ़ होकर मीडिया के रास्ते वह अपनी ही शक्ति और सामर्थ्य से विश्व को परिचित करा रही है। आज जरूरत इस बात की है कि हम उसकी ठोस सामाजिक और सांस्कृतिक मनोभूमि, उसकी उदारता के साथ–साथ उसके संरचनात्मक वैशिष्ट्य की अर्थवत्ता को लेकर उसके विस्तार की अनंत संभावनाओं को तलाशें।

रामायण महारानी का देश है फिजी : प्रो. सुरेश ऋतुपर्ण

नादी, 16 फरवरी 2023। 1834 से लेकर 1916 तक ब्रिटिश साम्राज्यवादियों की दासप्रथा की समाप्ति के बाद जो एक नई तरह की दास प्रथा उन्होंने शुरू की, उसे गिरमिट प्रथा भी कहा जा सकता है। गिरमिट प्रथा के अंतर्गत गए लाखों भारतवासी दुनिया के विभिन्न देशों में खेतिहर मजदूरों के रूप में पहुंचा दिए गए। उन लोगों ने जीवनपर्यंत शोषण और अन्याय का दंश भोगा लेकिन हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति का परचम सदैव ऊंचा रखा। उनकी संततियां आज तक उस परंपरा को निभा रही हैं। मॉरीशस, गयाना, त्रिनिदाद, सूरीनाम और फिजी तक आए इन भारतवंशियों ने हिंदी भाषा और साहित्य का भरपूर प्रचार–प्रसार किया और इसी का परिणाम है कि आज फिजी में 12वां विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित किया जा सका है। फिजी में जहां विक्टोरिया को महारानी कहकर संबोधित किया जाता था, वहीं भारतवंशियों ने अपना प्रतिरोध जताते हुए रामायण को महारानी कहकर संबोधित किया और आज तक वे 'रामायण महारानी' के जयकारे लगाते हैं।

प्रतिभागियों के अभिमत

फिजी के आकाश में चमकेगा हिन्दी का सूरज : प्रो संजीव कुमार दुबे

औपनिवेशिक काल में कहा जाता था कि अंग्रेजी राज में सूरज कभी अस्त नहीं होता। आज यह कहने में संकोच नहीं कि हिंदी का सूरज देश–विदेश में फैले हिंदीजन के कारण सदैव जगमगाता है। भारत में जब सुबह नहीं हुई होगी और अमरीका में तारीख नहीं बदली होगी तब फिजी में विश्व हिंदी सम्मेलन के उद्घाटन का दीप पूरी दुनिया में हिंदी का सूरज बन जगमग हो गया। फिजी में तीन दिवसीय विश्व हिंदी सम्मेलन का शुभारंभ हो चुका है। यह जानना रोचक है कि दुनिया भर में तिथि का निर्धारण करने वाली अंतरराष्ट्रीय डेटलाइन फिजी से होकर गुजरती है।

अनुसंधान में गुणवत्ता लाने की जरूरत : प्रो. टी.वी. कट्टीमनी

हिंदी में अनुसंधान बड़े पैमाने पर तो हमारे देश में हो रहा है लेकिन उसकी गुणवत्ता सुधारने की जरूरत है। हमारे अनुसंधान द्वारा आज के समय की समस्याओं का कैसे समाधान किया जाए, उस पर ध्यान देने की जरूरत है। हिंदी में होने वाला अनुसंधान हमारे देश की, हमारे समाज की समस्याओं का समाधान करने वाला होना चाहिए। स्वच्छता को ध्यान में रखने वाला अनुसंधान होना चाहिए। मतलब कूड़ा–कचरा जो बड़े पैमाने पर हमारे समाज में इकट्ठा हो रहा है, उसकी सफाई कैसे की जाए और उस कूड़े–कचरे से कैसे नए उत्पाद रिसाइक्लिंग करके बनाए जाएं, इस पर ध्यान देने की जरूरत है। इसको लैंडफिलिंग में भरने का, भूमि में इस को दफनाने का बहुत बड़ा जो नुकसान होता है वह खत्म हो जाएगा और साथ में अलग–अलग उपयोगी उत्पाद इससे तैयार होंगे। हिंदी में वैसा अनुसंधान होना चाहिए, जो भारत की समस्याओं को, भारत के मूल मुद्दों को हल करने में सहायक हो।

देवनागरी लिपि में ही हिंदी को लिखा जाना चाहिए : नीलोफर

मैं कई वर्षों से उज्बेकिस्तान के ताशकंद प्राच्य संस्था में हिंदी पढ़ा रही हूँ और मेरा मानना है कि हिंदी को देवनागरी लिपि में ही लिखा जाए क्योंकि लिपि भाषा का आधार अर्थात ढांचा होती है जिसमें लिखने की एक पद्धति शामिल होती है। विदेशों में प्रयोजनमूलक हिंदी से रोजगार के अवसर बढे है। अब बच्चे हिंदी पत्रकारिता, पर्यटन अध्ययन, दर्शन, अनुवाद आदि क्षेत्रों में नामांकन अधिक करवा रहे हैं।

दुनिया सुन रही है हिंदी की संस्कृति का नाद : हितेश शंकर

विश्व मंच पर हिंदी की गूंज को रेखांकित करने के लिए फिजी का चयन महत्वपूर्ण है। विश्व के अनेक देशों में और गिरमिटिया देशों में भी, हिंदी के सबसे जीवंत स्वरूप का साक्षात्कार फिजी में होता है। आम बोलचाल की भाषा होने के अतिरिक्त यह यहां की संसद में बोली जाती है और प्रस्ताव भी हिंदी में पारित होते हैं। यह जानना कई भारतीयों के लिए आश्चर्य मिश्रित हर्ष की बात है। जब हम हिंदी के विश्वबोध की बात करते हैं तो निश्चित ही भाषा के साथ इसका भूगोल भी शामिल होता है। हिंदी यानी हिंदुस्तान। हिंदी यानी उस देश की संस्कृति जिसने सबको साथ लेकर आगे बढ़ने का भाव पोषित किया।

दो शब्द हैं–कीमत और मूल्य, पहली बार में दोनों एक से लगते हैं परंतु अंतर है। कीमत चुकाने पर मूल्य स्थापित होते हैं। हिंदी ने समय के संघर्षों में अपना वैश्विक मूल्य स्थापित किया है। यह मूल्य है मानवता, विश्वबंधुत्व। भारत या कहिए हिंद ने बहुत से आक्रांता और औपनिवेशिक हमले झेले किंतु फिर भी अपनी संस्कृति को आक्रांताओं की मजहबी, नस्लीय और वर्गीय हितों तक सिमटी संकीर्ण सोच से बचाए रखा।

बाबा नानक ने जब 'खुरासान खसमान किया हिंदुस्तानु डराइया...' कहा तब उन्होंने इसी मजहबी कट्टरता की ओर इंगित किया, जो मानवता को रौंद रही थी। सिर्फ ब्रिटिश हितों को पोसने वाला अंग्रेजी राज भी ऐसी ही संकीर्णताओं में जकड़ा था।

हिंदुस्तान ने समय और संघर्षों के ये दौर देखे किंतु मानवता को रौंदने–रुलाने वाली इस मनोवृत्ति को स्वयं पर हावी नहीं होने दिया। हिंदुस्तान की संस्कृति की यही उदारता और सबके लिए हृदय के द्वार खोलने का भाव हिंदी में मिलता है। हिंदी यानी विश्व बंधुत्व। गिरमिटिया देश या कहीं और, आज हिंदी को तिलक लगाते भारतवंशीय विविध क्षेत्रों में समाज और विश्व का नेतृत्व कर रहे हैं बिना किसी कड़वाहट के और अप्रतिम उदारता व उत्साह के साथ।

फिजी की गूंज को ध्यान से सुनिए– जय हिंदी, जय हिंदुस्तान! दुनिया हिंदी की संस्कृति का यही नाद सुन रही है।

12वां विश्व हिन्दी सम्मेलन फिजी, २०२३

हिंदी विश्व

• फिजी • शुक्रवार, 17 फरवरी, 2023 • तीसरा अंक

4

प्रतिभागियों के अभिमत

हिंदी विश्व भाषा बनने की ओर अग्रसर : जनार्दन सिंह 'सीग्रीवाल'

नादी, 16 फरवरी 2023। लोकसभा सांसद जनार्दन सिंह 'सीग्रीवाल' ने कहा है कि जिस तरह योग ने पूरे विश्व को जोड़ा, उसी तरह विश्व हिंदी सम्मेलन दुनिया को जोड़ने का मंत्र है। श्री सीग्रीवाल ने एक विशेष बातचीत में कहा कि 12वें विश्व हिंदी सम्मेलन के आयोजन से न सिर्फ फिजी बल्कि पूरी दुनिया के हिंदी प्रेमियों को जोड़ने में मदद मिलेगी। हिंदी निरंतर विश्व भाषा बनने की ओर अग्रसर है। हिंदी का दुनिया में बढ़ना, भारतीय संस्कृति का बढ़ना है। कई गिरमिटिया देशों में भारतीय मूल के लोगों ने हिंदी और भारतीय संस्कृति को बचाकर रखा है।

वैश्विक संपर्क भाषा बने हिंदी : श्याम सिंह यादव

नादी, 16 फरवरी 2023। लोकसभा सांसद व संसदीय राजभाषा समिति के सदस्य श्याम सिंह यादव ने कहा कि हिंदी को अब वैश्विक संपर्क भाषा बनाने की जरूरत है। फिजी के नादी में आयोजित 12वें विश्व हिंदी सम्मेलन में विशेष रूप से उपस्थित श्री यादव ने सम्मेलन के दैनिक समाचार पत्र 'हिंदी विश्व' से बातचीत में यह बात कही। उन्होंने कहा कि उन्नीस सौ पचहत्तर में नागपुर में आयोजित पहले विश्व हिंदी सम्मेलन से शुरू हुई हिंदी की वैश्विक यात्रा अब प्रशांत महासागर के देश फिजी तक पहुंच चुकी है। हिंदी आज दुनिया की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। हिंदी आज वैश्विक स्थान प्राप्त कर चुकी है लेकिन विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में इसे और अधिक समृद्ध बनाने की आवश्यकता है।

हिंदी है विश्व की सबसे बड़ी वैज्ञानिक भाषा : रामचंद्र जांगड़ा

नादी, 16 फरवरी 2023। राज्यसभा सांसद तथा संसदीय राजभाषा की पहली उपसमिति के संयोजक रामचंद्र जांगड़ा ने कहा कि हिंदी विश्व की सबसे बड़ी वैज्ञानिक भाषा है। आधुनिक तकनीक से जोड़कर हिंदी का वैश्विक विस्तार किया जा सकता है। हम अपनी गौरवशाली संस्कृति के साथ इस बात पर भी गर्व करें कि हिंदी अपनी वैज्ञानिकता के कारण भारत ही नहीं पूरी दुनिया में अपना स्थान बना रही है। पूरी दुनिया में सर्वत्र अत्यंत सहजता और सुगमता से हिंदी का प्रयोग हो रहा है। हिंदी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। यह लिपि जितनी मधुर है, उतनी ही वैज्ञानिक भी है। इसका अक्षर अक्षर अपने आप में परिभाषा है।

भारत की बहुभाषिकता है उसकी ताकत : महुआ मांझी

नादी, 16 फरवरी 2023। भारत की बहुभाषिकता ही हिंदी की ताकत है और इसके माध्यम से हिंदी में विश्व भाषा बनने की क्षमता है। हिंदी की प्रसिद्ध लेखिका व राज्यसभा सांसद महुआ मांझी ने 12वें विश्व हिंदी सम्मेलन के दैनिक समाचार पत्र 'हिंदी विश्व' के साथ बातचीत में यह बात कही। उन्होंने कहा कि हिंदी भारत की सभी भाषाओं और बोलियों से शब्द लेकर जब गंगा की मुख्यधारा बनेगी तो वह सागर को पहुँचेगी। किसी भी देश की सभ्यता को वहां की भाषा से जाना जा सकता है। हिंदी भारतीय भाषाओं की वैश्विक पहचान बन चुकी है। संसार में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली तीन भाषाओं में हिंदी अपना स्थान बना चुकी है। हिंदी की दुनिया केवल अपने देश तक सीमित नहीं है बल्कि विश्व स्तर पर फैल चुकी है। भारतीय भाषाओं को समृद्ध करते हुए हिंदी पूरे विश्व में उनका नेतृत्व करने की क्षमता रखती है। फिजी में आयोजित 12वें विश्व हिंदी सम्मेलन से हिंदी के वैश्विक विस्तार में मदद मिलेगी।

राष्ट्रीय स्वाभिमान की भाषा है हिंदी : अशोक कुमार यादव

नादी, 16 फरवरी 2023। लोक सभा सांसद अशोक कुमार यादव ने कहा कि हिंदी भारत के राष्ट्रीय स्वाभिमान की भाषा है। हिंदी ने हमें विश्व में एक नई पहचान दिलाई है। यह विश्व में बोली जाने वाली प्रमुख भाषाओं में से एक है। हिंदी हमारे देश की संस्कृति और संस्कारों का प्रतिबिंब है। आज विश्व के कोने–कोने से विद्यार्थी हमारी भाषा और संस्कृति को जानने भारत आ रहे हैं। हिंदी हमारे संस्कारों की भाषा है। वर्तमान समय में विश्व के 179 देशों में हिंदी भाषा पढ़ाई जाती है। अगर हम हिंदी के प्रति निरंतर समर्पण रखें तो वह दिन दूर नहीं जब हिंदी दुनिया की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा बन जाएगी।

हिंदी उपनिवेशवादी षड्यंत्रों के खिलाफ लड़ने का सशक्त माध्यम है

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. कुलदीप चंद्र अग्निहोत्री से प्रो. अवधेश कुमार की बातचीत

आज क्या हिंदी अपने आप में एक भाषा है या एक सामूहिक चेतना का प्रतिनिधित्व करती है? इस पर क्या कहना चाहते हैं?

यूरोपीय जाति ने जिन दिनों अफ्रीका, एशिया, अमेरिका, न्यूजीलैंड और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों को अपनी साम्राज्यवादी नीति का शिकार बनाया, तो वहाँ के निवासियों की भाषा व संस्कृति को समाप्त करके एक उपनिवेशवादी पहचान बनाने की कोशिश की। अमरीका महाद्वीप में इसका शिकार रेड इंडियन (जिन्हें आजकल केवल इंडियन कहा जाता है) हुए। ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड में वहाँ के मूल निवासी और उनकी भाषा इसका शिकार हुई। फिजी, गयाना, सूरीनाम, मॉरीशस, त्रिनिदाद इत्यादि देशों में वहाँ के रहने वाले तो इसका शिकार हुए ही, लेकिन इसके साथ ही भारतीयों को गुलाम बनाकर इन देशों में लाया गया। इतने महाद्वीपों में साम्राज्यवादी हितों पर सबसे सशक्त लड़ाई हिंदुस्तान ने लड़ी और उसमें हिंदी ने प्रमुख भूमिका निभाई। फिजी में भी लगभग ऐसा ही हुआ। इसलिए जब आज वैश्विक संदर्भ में हम हिंदी की बात करते हैं, तो उसमें हिंदी उन सभी भाषाओं के संयुक्त प्रतीक के रूप में उभरती है। जिन देशों ने साम्राज्यवादी आक्रमणकारियों के खिलाफ संघर्ष किया, इस लिहाज से हिंदी दुनिया भर में उपनिवेशवादी षड्यंत्रों के खिलाफ लड़ने का एक सशक्त माध्यम है। लेकिन ध्यान रखना होगा कि हिंदी की इस अवधारणा में उन सभी देशों की भाषाएँ सिमटी हुई हैं, जिन्होंने साम्राज्यवादी अत्याचारों का सामना किया और उनसे लंबी लड़ाई लड़ी।

ऐसा देखा जा रहा है कि जिन देशों ने हिंदी या अपनी अन्य भाषाओं के माध्यम से उपनिवेशवादी ताकतों के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी, वही हिंदी आज हाशिये पर क्यों जा रही है?

कोई भी समाज जब विदेशी उपनिवेशवादी ताकतों के खिलाफ लड़ाई लड़ता है, तो वह अपने स्थानीय प्रतीकों एवं स्थानीय भाषा को हथियार के तौर पर इस्तेमाल करता है क्योंकि भाषा उस देश की सांस्कृतिक चेतना से भी जुड़ी होती है। लेकिन जब शत्रु परिदृश्य से गायब हो जाता है, तो वही समाज अपने इन हथियारों को फिर म्यान में रख लेता है और उपनिवेशवादी वि. रासत को संभालने के काम में ही जुट जाता है। यह बहुत गहरा मनोविज्ञान है। इसको केवल फिजी या मॉरीशस में ही नहीं देखा जा रहा बल्कि बड़ी आसानी से हिंदुस्तान में भी देखा जा सकता है। लेकिन इस मनोवैज्ञानिक निद्रा का भी एक सीमित कालखंड होता है। यही कारण है कि इस कालखंड के समाप्त होने पर वही समाज चेतन अवस्था में आ जाता है और अपनी भाषा और अन्य सांस्कृतिक प्रतीकों को फिर संभालने में जुट जाता है। हिंदुस्तान में पिछले एक–दो दशकों से यह स्पष्ट देखा जा सकता है। मुझे आशा है कि प्रशांत क्षेत्र व अन्य कैरेबियन देशों में यह प्रक्रिया शुरू होने जा रही है। विश्व हिंदी सम्मेलन इस प्रक्रिया को तेज करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

विश्व में संस्कार भाषा के रूप में अब जानी जा रही है हिंदी : राकेश पांडेय

नादी, 16 फरवरी 2023। हिंदी की विश्व में उपस्थिति का प्रमाण है फिजी में आयोजित यह 12वां विश्व हिंदी सम्मेलन। फिजी के संविधान की भाषा तो हिंदी थी ही, अब संसदीय कार्यवाही की भी भाषा हिंदी हो गई है। यह समूचे हिंदी संसार के लिए अत्यंत हर्ष का विषय है। हिंदी भारत की राजभाषा होने के अतिरिक्त विश्व में संस्कार भाषा होने के रूप में भी जानी जाती है। व्यापार की भाषा के रूप में निरंतर अग्रणी हो रही है। फिजी के वरिष्ठ लेखक डॉ सुब्रमनी कहते हैं कि उन्होंने तुलसी से लिखना सीखा है। 'फिजी हिंदी' में रचित उनके दो उपन्यास 'दउका पुरान' और 'फिजी मां' विश्वविख्यात हैं। फिजी में हिंदी की पहचान इसी साहित्य से है। इसी प्रकार मॉरीशस सहित अन्य देशों में हिंदी ने अपना स्वरूप स्वाभाविक रूप से उन्हीं देशों के अनुरूप गढ़ा हुआ है, जिसे उन देशों में रचे गए साहित्य से जाना जा सकता है। हिंदी देश की सीमाओं से निकलकर अनेक देशों की अपनी हिंदी हो चुकी है। हमारी अगली चुनौती युवा पीढ़ी को हिंदी के निकट लाना है। हिंदी बढ़ेगी, देश बढ़ेगा।

भारतीयता और हिंदी की स्वीकार्यता बढ़ी : प्रभात कुमार

नादी, 16 फरवरी 2023। 'विश्व हिंदी सम्मेलन' अवसर होना चाहिए हिंदी के व्यावहारिक उपयोग के संकल्प का। जिस प्रकार से विश्वभर में भारतीयता और हिंदी की व्याप्ति और स्वीकार्यता बढ़ी है, थोड़ा अधिक प्रयास करके हम एक ऐसा ठोस आधार बना सकते हैं, जहाँ से हिंदी की ध्वजा वैश्विक स्तर पर फहरती रहे। हिंदी भाषा के प्रति सम्मान और गौरवबोध जाग्रत् करना, शुद्ध हिंदी लिखना–बोलना, नए शब्द गढ़ना, मानकीकरण करना, 'पुस्तक संस्कृति' विकसित करना, पुस्तकें पढ़ना और उपहार में देना, तकनीकी स्तर पर हिंदी को समुन्नत करना ऐसे कुछ काम हैं, जिन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। इस सम्मेलन में प्रतिभागियों द्वारा सम्मेलन में व्यक्त विचार और मंतव्यों तथा पूर्व के सम्मेलनों की अनुशंसाओं के आधार पर ऐसे दिशासूत्र निर्धारित कर सकते हैं, जो हिंदी का पथ प्रशस्त करेंगे।

हिंदी जगत ने तकनीक के महत्व को अंगीकार किया : नंदकिशोर पांडेय

12वाँ विश्व हिंदी सम्मेलन हिंदी के विकास की अनेक संभावनाओं को लेकर उपस्थित हुआ है। 8वें विश्व हिंदी सम्मेलन तक प्रायः हिंदी साहित्य पर चर्चा होती थी। उसके पश्चात साहित्य के साथ–साथ हिंदी भाषा के विकास, उसके आधुनिकीकरण, वैश्विक स्थिति तथा तकनीकी पक्ष पर चर्चा प्रारंभ हुई। यह हिंदी का व्यावहारिक पक्ष है। इस विषय को कभी पद्मभूषण डॉ. मोटुरि सत्यनारायण ने 1971 में उठाया था, आज 12वें विश्व हिंदी सम्मेलन में जब हम परंपरागत ज्ञान के साथ कृत्रिम मेधा तक की चर्चा कर रहे हैं, तो इससे यह संदेश साफ है कि हिंदी जगत तकनीक के महत्त्व को अंगीकार कर रहा है और वह उसके विमर्श का विषय बना है।

प्रधान संपादक
प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल

कार्यकारी संपादक
प्रो. विनोद कुमार मिश्र

समन्वयक संपादक
प्रो. कृपाशंकर चौबे

संपादन सहयोग
प्रो. चंद्रकांत एस. रागीट, प्रो. अनिल कुमार राय, प्रो. प्रीति सागर, प्रो. अवधेश कुमार, प्रो. अखिलेश कुमार दुबे, प्रो. शिरीष पाल सिंह, डॉ. प्रियंका मिश्र, डॉ. सुनील कुमार, डॉ. योगेन्द्र बाबू, राजेश कुमार यादव, डॉ. अमित कुमार विश्वास, पवन कुमार, अंजलि हजगैबी बिहारी, डॉ. उर्वशी गहलौत, डॉ. राजेश कुमार 'मांझी'

मुद्रक एवं प्रकाशक
विदेश मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली